17 cm spine 0.7 cm 24 cm

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

मेरे इस्लामी भाईयो और बहनो! -अल्लाह आप पर दया करे- ज्ञात होना चाहिए कि हमारे ऊपर चार मसाईल का सीखना अनिवार्य है :

❶ **पहला मस्अला : ज्ञान :** इस से मुराद अल्लाह तआला का ज्ञान, उसके पैग़म्बर ﷺ का ज्ञान और इस्लाम धर्म का ज्ञान है। क्योंकि बिना ज्ञान और जानकारी के अल्लाह की इबादत करना वैध नहीं, और जो आदमी ऐसा करता है उसका अन्जाम गुमराही और पथ भ्रष्टता है, और ऐसा करने में वह ईसाईयों की मुशाबहत (छवि) अपना रहा है।

❷ **दूसरा : अमल :** अतः जिस आदमी ने ज्ञान प्राप्त किया और उसके अनुसार अमल नहीं किया, उस ने यहूदियों की मुशाबहत अपनाई, क्योंकि उन्हों ने ज्ञान तो प्राप्त किया, किन्तु उसके अनुसार अमल नहीं किया। तथा शैतान के हीलों में से एक हीला यह भी है कि वह मनुष्य के दिमाग़ में यह वह्म डालते हुए उसे ज्ञान से घृणा दिलाता है कि वह ऐसी अवस्था में अपनी अज्ञानता के कारण अल्लाह के यहाँ मा'ज़ूर (क्षम्य) समझा जाएगा। हालाँकि उसे नही मालूम कि जिस मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्त करना सम्भव है और उसने ज्ञान प्राप्त नहीं किया तो उस पर हुज्जत क़ायम हो गई। और यही हीला नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम का भी था जिस समय : **''उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया।''** ताकि उन पर हुज्जत क़ायम न हो।

❸ **तीसराः दावत :** (जो कुछ धर्म-ज्ञान आप ने सीखा है उसकी ओर दूसरों को दावत देना) क्योंकि उलमा (धर्मज्ञानी) और दावत का कार्य करने वाले ही पैग़म्बरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं, और अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल पर धिक्कार किया है; क्योंकि वे लोग **"आपस में एक दूसरे को बुरे कामों से जो वे करते थे, रोकते न थे, जो कुछ भी यह करते थे यक़ीनन वह बहुत बुरा था।"** दावत और शिक्षा फ़र्ज़े किफ़ाया है, यदि यह कर्तव्य इतने लोग अन्जाम देते हैं जो पर्याप्त हैं तो कोई भी गुनहगार नहीं होगा, और अगर सभी लोग इसे छोड़ देते हैं, तो सब के सब गुनहगार हों गे।

❹ **चौथा : कष्ट पर धैर्य करना :** अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने, उस पर अमल करने और उसकी ओर दावत देने के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों और कष्टों पर सब्र करना।

हम ने इस पुस्तक में संछेप को ध्यान में रखने के साथ-साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शुद्ध रूप से प्रमाणित बातों का उल्लेख किया है, हम सम्पूर्णता का दावा नहीं करते, क्योंकि सम्पूर्णता को अल्लाह ने अपने लिए विशिष्ट किया है, बल्कि यह एक निम्न योग्यता वाले व्यक्ति का प्रयास है, यदि यह उचित है तो अल्लाह की ओर से है, और यदि ग़लत है तो यह हमारे नफ़्स और शैतान की ओर से है, और अल्लाह और उसके पैग़म्बर इस से बरीयुज़्ज़िम्मा हैं, और अल्लाह उस आदमी पर दया करे जो उद्देश पूर्ण रचनात्मक आलोचना के द्वारा हमें हमारी त्रुटियों और कमियों से अवगत करे।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि इस पुस्तक के संकलन, इसकी छपाई और वितरण, इसके पाठन और शिक्षा में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को बेहतरीन प्रतिफल से सम्मानित करे, इसे उनकी ओर से स्वीकार करे और उनके अज्र व सवाब को दूना करे।

अल्लाह तआला ही सर्वाधिक ज्ञान रखने वाला है, तथा अल्लाह तआला की दया और शान्ति अवतरित हो हमारे पैग़म्बर व सरदार मुहम्मद ﷺ पर, और आप की सभी संतान और साथियों पर।

इस्लामी दुनिया के विद्वानों और छात्रों के एक समूह ने इस किताब को सराहा और सिफ़ारिश की है।
अधिक जानकारी, या इस किताब को मंगाने के लिए : साइट/ www.tafseer.info ईमेल / hin@tafseer.info
प्रथम संस्करण : रबीउल अव्वल, 1431 हि.

रिवायत करते हैं, और कहते हैं : जब से मैं ने अल्लाह के रसूल से यह ह़दीस सुनी मुझ पर कोई भी रात ऐसी नहीं बीती कि मेरी वसियत लिख्खी न हो।

▶ इमाम अह़मद رحمه الله कहते हैं : "मैं ने जो भी ह़दीस लिख्खी उस के अनुसार कर्म किया, यहाँ तक कि मुझ पर यह ह़दीस गुज़री कि नबी ﷺ ने सिंघी लगवाई और अबू तैबा को एक दीनार दिया, तो मैं ने भी जिस समय सिंघी लगवाई सिंघी लगाने वाले को एक दीनार दिया"।

▶ इमाम बुख़ारी رحمه الله कहते हैं : "जिस समय से मुझे ग़ीबत के ह़राम होने का ज्ञान हुवा, मैं ने किसी की ग़ीबत नहीं की, मुझे अवश्य उम्मीद है कि अल्लाह से मैं इस ह़ालत में भेंट करूंगा कि किसी की ग़ीबत करने पर वह मेरा मुह़ासबा नहीं करेगा।''

▶ ह़दीस में आता है : "जिस ने हर नमाज़ के बाद आयतुल् कुर्सी पढ़ी उसे जन्नत में जाने से मात्र उस की मौत ही रोक सकती है"। इब्नुल् क़ैइम رحمه الله कहते हैं : "मुझे शैख़ुल् इस्लाम के इस कथन का पता चला है कि मैं ने किसी भी नमाज़ के बाद इसे पढ़ना नहीं छोड़ा सिवाय इस के कि मैं भूल गया हूँ या इस तरह की कोई और बात होगई हो"।

■ इल्म प्राप्त करने और उस के अनुसार कर्म करने के बाद तुम पर ज़रूरी है कि उस की ओर लोगों को बोलाओ, और अपने आप को सवाब से और दूसरों को भलाई से महरूम न करो। नबी ﷺ ने फ़रमाया : "भलाई की ओर बुलाने वाले को उस पर कर्म करने वाले के बराबर सवाब मिलता है"। और आप ﷺ ने यह भी फ़रमाया : "तुम में श्रेष्ठ वह है जिस ने क़ुर्आन का ज्ञान सीखा और सिखाया"। और आप ने फ़रमाया : "मेरी ओर से लोगों तक पहुँचा दो चाहे एक आयत ही क्यों न हो"। इसलिए जितना ही तुम भलाई को फैलाओगे उतनाही तुम्हारे सवाब में बढ़ौतरी होगी, और जीवन में तथा मौत के पश्चात भी तुम्हारी नेकियाँ जारी रहेंगी। नबी ﷺ ने फ़रमाया : "जब इन्सान मर जाता है तो उस के कर्म ख़तम होजाते हैं सिवाय तीन चीज़ों से : सदक़ा जारिया से, ऐसे ज्ञान से जिस से लाभ उठाया जा रहा हो, या नेक औलाद से जो कि उस के लिए दुआ करे"।

प्रकाश : प्रत्येक दिन हम 17 बार से अधिक सुरतुल् फ़ातिह़ा पढ़ते हैं, इस के द्वारा हम उन लोगों से पनाह मांगते हैं जिन पर अल्लाह का क्रोध हुवा तथा जो गुम्राह थे, परन्तु हम उन्हीं जैसा कर्म करते हैं, इल्म सीखते नहीं और जिहालत जैसा अमल करते हैं, और इस प्रकार हमारा कर्म गुम्राह नसारा जैसा हो जाता है, या इल्म सीखते हैं पर कर्म नहीं करते, और हम धिक्कारित यहूदियों की छवि अपना लेते हैं।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें लाभ-दायक ज्ञान, और नेक कर्म से नवाज़े।

अल्लाह और उस के रसूल अधिक बेहतर जानते हैं, और दरूद तथा सलाम नाज़िल हो हमारे सरदार और ह़बीब मुह़म्मद पर और उनके परिवार-परिजन और सारे सहाबा (साथियों) पर।